ISSN No. (E) 2455 - 0817
ISSN No. (P) 2394 - 0344

RNI : UPBIL/2016/67980
Vol I * Issue - VIII * November, 2016 Monthly / Bi-lingual

Multi-disciplinary International Journal

Remarking
An Analisation

Impact Factor
GIF = 0.543

Indexed with Google scholar

Impact Factor
SJIF =4.473

24	अन्ना हजारे का जन लोकपाल बिल एक आलोचनात्मक विश्लेषण चन्द्रा सोलंकी, अजमेर	85-86
25	विश्व में आतंकवाद का बढ़ता दायरा मीनाक्षी शर्मा, मुरादाबाद	87-92
26	भारत–पाक संबन्धों में सोवियत संघ की भूमिका (1965 ई०–1966 ई०) के विशेष सन्दर्भ में असमां खातून, शाहजहाँपुर	93-95
27	महिलाओं के विरुद्ध अपराध : एक विश्लेषण श्रमवीर सिंह कुशवाह, आगरा	96-100
28	मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा–साहित्य का कला और विज्ञान की दिशा में योगदान आर0 के0 राय, सिकन्द्राबाद, बुलन्दशहर	101-105
29	समाज में मूल्यों का क्षरण : कारण व समाधान मंजय कुमार, गाजियाबाद	106-108
30	सरकारी स्कूलों से दूर होते बच्चे: कारण व निवारण दिनेश प्रताप सिंह, गाजियाबाद	109-110
31	डॉ0 रामविलास शर्मा का आलोचना कर्म और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का लेखन मन्जुला शर्मा, रानीगंज, पश्चिम बंगाल	111-113
32	बदलते वैश्विक परिदृश्य में एशिया नेहा निरंजन, सागर, मध्य प्रदेश	114-120

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
RNI No.UPBIL/2016/67980
VOL-I* ISSUE- VIII* November- 2016
Remarking An Analisation

बदलते वैश्विक परिदृश्य में एशिया

नेहा निरंजन
असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान एवं
लोकप्रशासन विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर, मध्य प्रदेश

सारांश

विश्व के सबसे बड़े महाद्वीप एशिया में विभिन्न राष्ट्रों ने अपने स्तर पर संसाधनों का उपभोग करते हुए उन्नत एवं प्रगतिशील राष्ट्रों की श्रेणी में अपना स्थान बनाया है। भारत, चीन, जापान, वर्मा इत्यादि राष्ट्रों ने अमेरिकी हस्तक्षेप को चुनौती देते हुए अपने आप को सुदृढ़ बनाया है। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से एशिया महाद्वीप के भिन्न–भिन्न राष्ट्रों के आपसी संबंध एवं राष्ट्रों में एकजुटता के फलस्वरूप अमेरिकी हस्तक्षेप को नकारा तथा विभिन्न समूहों का निर्माण कर अमेरिका को चुनौती प्रदान की।

मुख्य शब्द : एशिया महाद्वीप, बहुध्रुवीय, विश्व व्यवस्था शंघाई सहयोग संगठन पारस्परिक साझेदारी, लुक ईस्ट पॉलिसी, सामूहिक सहयोग।

प्रस्तावना

एशिया महाद्वीप क्षेत्र एवं जनसंख्या के आधार पर विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है इस महाद्वीप में तुर्क व रूस का कुछ क्षेत्र भी शामिल है, जबकि ये दोनों राष्ट्र यूरोप में स्थित है। इस महाद्वीप में विश्व के विकसित–अविकसित एवं विकासशील 45 राष्ट्र जैसे दक्षिण में अफगानिस्तान, बंग्लादेश, भारत, मलेशिया, नेपाल, पाकिस्तान, सिंगापुर, श्रीलंका आदि, उत्तर में कजांखस्तान, उज्बेकिस्तान आदि, पूर्व में चीन, जापान, उत्तरी एवं दक्षिणी कोरिया, ताइवान आदि तथा पश्चिम में ईरान, ईराक, इजराइल, साऊदी अरब आदि विद्यमान है। भारत व चीन की सभ्यता दुनिया में सबसे पुरानी सभ्यताओं में एक है। एशिया महाद्वीप ने बीसवीं सदी के दौरान हुये द्वितीय विश्वयुद्ध, वियतनाम युद्ध और खाड़ी युद्ध के प्रभाव को अनुभव किया है। यह महाद्वीप विश्व की प्रमुख भाषाओं – चीनी, जपानी, कोरियाई, संस्कृत, हिन्दी आदि तथा प्रमुख धर्मों – हिन्दु, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, ताओ, पारसी आदि का केन्द्र है। 21वीं सदी में बदलते विश्व परिदृश्य में एशिया के महत्व में वृद्धि हुई है जिस कारण अमेरिका जैसी महाशक्ति का एशियाई देशों की ओर आकर्षण बड़ा है।

उद्देश्य

21वीं सदी में एक ध्रुवीय विश्व की अवधारणा को प्रतिस्थापित करने में बहुध्रुवीय विश्व की अवधारणा सथापित हो रही है जिसमें एशिया महाद्वीप की महत्वपूर्ण भूमिका है। एशिया के महत्वपूर्ण राष्ट्रों के आपसी संबंधों को एवं विश्व राजनीति में एशिया की स्थिति का अध्ययन करना इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य है।

एशियाई परिदृश्य

जब यूरोप में शीतयुद्ध समाप्त हुआ तथा यूरोपीय अर्थ व्यवस्था का एकीकरण हो रहा था तब यह मान लिया गया कि सुरक्षा का जो पारंपरिक दृष्टिकोण है, वो अब अप्रासांगिक हो गया है और राज्य एवं उसकी संप्रभुता की अवधारणा को भी अप्रसांगिक माना जा रहा है, क्योंकि इस अवधारणा को बहुत शक्तिशाली तरीके से वैश्विक एवं क्षेत्रीय स्तर पर नकारा जाता रहा है फिर भी पारंपरिक सुरक्षा के जो ढांचे हैं वो यूरोप में अभी भी विद्यमान हैं। यह इस बात से प्रदर्शित होता है कि आज भी नाटो जैसा संगठन इस विश्व में एक शक्तिशाली सैनिक साधन के रूप में विद्यमान है, पूर्वी एवं मध्य यूरोप के देश इस संगठन से जुड़ने के लिए उत्साहित रहते हैं। जहां यूरोप में एकीकरण की प्रक्रिया पुराने संप्रभुता के सिद्धांत से ऊपर उठकर हो रहा है वहीं आज भी एशिया में शक्तिशाली राष्ट्रवाद का उदय एवं एशिया का संगठित होना बहुत हद तक आर्थिक अनिवार्यता को ध्यान में रखकर नहीं हुआ है तथा अब भी एशिया में यूरोप की तरह यह माना जाता है कि उदारवादी प्रजातंत्र ही शासन करने का श्रेष्ठ साधन है।

पश्चिम यूरोप का जहां एक ओर सोवियत रूस से सदियों से विवाद चल रहा था तथा साम्यवाद को लेकर जो आंतरिक युद्ध चल रहा था वो युद्ध अब संयुक्त राज्य के नेतृत्व में खत्म हो गया है तथा एक सफल सहयोगी सुरक्षा